Socio-Economic and Technological Advancements in 21st Century India

21वीं सदी में भारत में सामाजिक–आर्थिक और तकनीकी प्रगति

Editors

Rabindra Kumar

Jyoti Sah

Deen Dayal Upadhyay Government P.G. College

Sitapur (U.P.)

 ISBN: 978-81-947346-4-2

21वीं सदी में मानव विकास सूचकांक के सन्दर्भ में महिला सशक्तिकरण का मूल्यांकन

डा0 ज्योति साह
एसोसिएट प्रोफेसर, दीन दयाल उपाध्याय
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
सीतापुर।

विकास एक सतत प्रक्रिया है और आर्थिक और तकनीकी विकास के साथ–साथ समाज के सभी वर्गों का चहुंमुखी विकास ही राष्ट्र की प्रगति का आधार है। विकास को सकल घरेलू उत्पाद और सकल राष्ट्रीय उत्पाद के आधार पर परिभाषित किया जाता है। अस्सी के दशक में अमर्त्य सेन के शोध के आधार पर माना गया कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति का पैमाना सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जी.एन.पी.) एवं सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) के स्थान पर उसका मानव विकास सूचकांक (एच.डी.आई.) होना चाहिए। उनके द्वारा असमानता पर जब शोध प्रस्तुत किया गया, तो लैंगिक असमानता को सबसे प्रमुख समस्या के रूप में देखा गया। यह भी देखा गया कि जब भी विकास की बात की जाती तो सामान्यतः केवल पुरूषों एवं उनके विचारों, उपलब्धियों अथवा असफलताओं का ही जिक्र किया जाता है और उसी के आधार पर समस्त शोध, लेखन और योजनायें बनाई जाती हैं। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में विश्व परिदृश्य में परिवर्तन आया और महिलाओं की दशा सुधारने पर ध्यान दिया जाने लगा। यह माना गया कि समाज के सतत् विकास हेतु लैंगिक समानता एक आवश्यक शर्त है। किसी समाज में उसकी आधी आबादी महिलाओं की स्थिति एवं दशा का मूल्यांकन किए बगैर उस समाज की वास्तविक प्रगति का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

इसके आलोक में 21वीं सदी के दो दशक बीत जाने के बाद भारत में महिला सशक्तिकरण की वास्तविक स्थिति क्या है, इसकी पड़ताल करने की आवश्यकता है। इस शोधपत्र के माध्यम से मानव विकास सूचकांक के प्रमुख बिन्दुओं–शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा के पैमानों पर महिलाओं की स्थिति एवं दशा का तुलनात्मक मूल्यांकन किया गया है। साथ ही भविष्य हेतु निर्धारित लक्ष्यों का भी विवेचन किया गया है।